<u>जून माह के कृषि कार्य</u>

किसान बहिनों एवं भाईयों, नमस्कार ! जून माह जिसे आप ज्येष्ठ-आषाढ़ भी कहते है भयंकर गर्मी लेकर आता है । चारों दिशाओं में पानी व बिजली की कमी महसूस होती है । मानव तो गन्ने व आम का रस या तरबूज से अपनी प्यास बूझा लेता है परन्तु धरती व फसलें इंतजार करती है मौनसून के आगमन का जोकि जून अन्त तक दस्तक दे देती है फिर चारों तरफ बहार ही बहार छा जाती है । हम आपके प्रश्नों पर आधारित जून माह में होने वाले कृषि कार्य बतायेगें । लेख में सभी नापतोल प्रति एकड हिसाब से है ।

<u>तीन जरूरी बातें -</u>

- **जल संग्रहण** (जल ही जीवन है) जीवित प्राणियों में चाहे पशु हो या पौधे जल की मात्रा तीन-चौथाई से अधिक होती है । ये मात्रा कम होने से जीवन का ह्रास होना शुरू हो जाता है तथा ज्यादा देर तक पानी की कमी से जीवन समाप्त हो सकता है । इसलिए पानी की प्रत्येक बूंद अमूल्य है चाहे ये वर्षा से, नदी से या जमीन से प्राप्त हो, इसे बर्बाद न करें । वर्षा के पानी को तालाबों में ले जाकर जमा करें एवं खेती के लिए प्रयोग करें ।
- **नमी संरक्षण** (बारानी क्षेत्रों का कृषि आधार) - गर्मियों में उपलब्ध पानी से अधिक से अधिक कृषि पैदावार लेने के लिए पानी का जमीन से वाष्पीकरण कम करना जरूरूरी है क्योंकि १/३ पानी इस विधि से उड जाता है मलचिंग करने से वाष्पीकरण बहुत कम हो जाता है और उपलब्ध पानी सिर्फ फसल को ही मिलता है । इससे खेत की मिट्‌टी का तापमान सही रहता है जिससे पैदावार बढ़ती है ।
- **खरपतवार नियंत्रण** (नमी तथा पोषक तत्वों का सदुपयोग) - खरपतवार फसल के मुकाबले शीघ्र बढ़ते हैं तथा जमीन में उपलब्ध नमी पोषक तत्वों का उपयोग तेजी से करते है । इससे फसल की बढ़त कम रह जाती है तथा पैदावार में भरी गिरावट होती है । खेती में हने वाले कुल नकसान के लिए ५०-६० प्रतिशत सिर्फ खरपतवार जिम्मेदार हैं । इसलिए समय पर खरपतवार नियंत्रण विशेषकर फसल के पहले ३०-४० दिन बहुत जरूरी है ।

<u>धान</u> - वासमती धान की नर्सरी जून के पहले पखवाडे में पहले बताई गई विधि से लगायें । बाकीं धान की रोपाई १५ जून से शुरू कर दें जिसमें कम व मध्यम अवधि वाली बौनी किस्मों की ३० दिन पुरानी पौध चुने । खेत में पानी देकर अच्छा गारा बनालें फिर सुहागे से समतल कर रोपाई करें । पौध को उखाडने से पहले एक दिन क्यारी में पानी दें तथा ध्यान रहे कि पौध की जडों को नुकसान न हो । पानी से धोकर जडों से किचड हटालें । पौध को लाइनों में रोपें तथा एक जगह २-३ पौधें ६ x ६ इंच दूरी पर लगायें । पोध सीधी तथा 1 इंच से गहरी नहीं बैठनी चाहिए । खाद, मिट्‌टी जांच आधार पर डालें । बौनी व मध्यम अवधि वाली किस्मों में एक बोरा यूरिया, ३ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट तथा एक बोरा म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड लेव बनाते समय दें । यह मात्रा कम अवधि वाली किस्मों में थोडी कम कर सकते है । यदि खेत में मई माह में हरी खाद के लिए ढ़ैंचा बोया है तो उसे ४५ दिन बाद जमीन में दबा दें तथा 1 सप्ताह के बाद धान रोपाई कर दें अन्यथा लेव बनाते समय ६ टन प्रति एकड गोबर की खाद दें । यदि ढ़ैंचा को फासफोरस दी है तो धान में देने की जरूरत नहीं होती है तथा अन्य खाद की मात्रा भी २/३ कर सकते हैं । यदि लेव बनाते समय खाद न डाल सके तो ७ दिन के अन्दर भी डाल सकते हैं ।

रोपाई के १५ दिन बाद पैडीवीडर द्वारा निराई की जा सकती है । दवाईयों से भी खरपतवार नियंत्रण कर सकते हैं । दानेदार व्यूटाक्लोर १२ कि.ग्रा. या थायोवैनकार्व ६ कि.ग्रा. पौधरोपण के २-३ दिन बाद तक २ इंच गहरे पानी में एकसार विखेंर दें । यदि उक्त दवाईयां तरल है तो १.२ लीटर के हिसाब से ६० कि.ग्रा. रेत में मिलाकर छिडकें । इसके अतिरिक्त पैडीमेथालिन, एनिलोफास, प्रेटिलाक्लोर, पलुक्लोरालिन भी प्रयोग की जा सकती है । धान के खेत में २ ईचं से ज्यादा पानी नहीं होना चाहिए । रोपाई के ६ से १० दिन बाद जब पौध जड पकड लें, पानी रोक ले ताकिं जडें विकसित हो जाये । प्रति सप्ताह पानी निकास करके ताजा पानी भरें । सिंचाई का पानी अच्छी किस्म का होना चाहिए ।

जून माह में कुछ कीडे तथा बिमारियां धान में आक्रमण करती हैं जैसे कि धान के टिड्डे पनीरी और रोपी गई फसल के पत्तों को खाते हैं तथा नियंत्रण के लिए १० कि.ग्रा. मिथाइल पैराथियान २ प्रतिशत घूडा प्रति एकड करें । जीवाणु पत्ता अगमारी रोग में पत्तियां पीली पडकर सूख जाती है तथा तने से पीला-सफेद चिपचिपा पदार्थ निकलता है । इसकी रोकथाम के लिए एच.के.आर-१२० और आई आर ६४ किस्में के प्रमाणित बीज लगायें । नत्रजन खाद की मात्रा कम डालें, अगेती रोपाई न करें तथा नर्सरी को छाया में न उगायें । यदि रोपी गई फसल में पीलापन नजर आये तो लोहे की कमी हो सकती है जिसके लिए ०.५ प्रतिशत फेरस सल्फेट का घोल छिडके । यदि पत्तों पर कथई के रंग के धब्बे नजर आये तो ०.५ जिंक सल्फेट का घोल छिडके ।

मक्की - खेत में से घासफूस निकाल दें अन्यथा ५० प्रतिशत तक पैदावार कम हो जाती है । नत्रजन खाद की दूसरी किस्त (आधा बोरा यूरिया) मक्का के तनों के पास रखकर मिट्टी में मिला दें इसके खाद भी लग जायेगी तथा घासफूस भी निकल जायेगा । जून में मक्की को नियमित नमी की जरूरत रहती है तथा पानी खडा भी नहीं रहना चाहिए । जल निकास के लिए पौधों की कतारों के बीच छोटी-छोटी नालियां बनायें । जून माह में तना छेदक का आक्रमण होने पर पौध की गोभ में १०-१० दिन के बाद एण्डोसल्फान ३५ ई.सी.के चार छिडकाव करें । पहले २५० मि.ली., फिर ३७५ मि.ली., फिर तीसरी तथा चौथी बार ५०० मि.ली. २००-४०० लीटर पानी में छिडके । चुरडा (थिप्स) व हरा तेला छोटे पौधों के पत्तों का रस चूसता हैं। इसकी रोकथाम के लिए २५० मि.ली. मैलाथियान ५० ईसी २५० लीटर पानी में छिडकें । रोगों की सामुहिक रोकथाम के लिए ५-७ सप्ताह की फसल पर १५० ग्राम कैप्टान और ३३ ग्राम स्टैवल ब्लीचिंग पाऊडर को १०० लीटर पानी में घोलकर पोधों की जडों को गीला करें । जब फसल घुटनों तक हो जाये तो पत्तों की अंगमारी व अन्य रोगों के लिए 1 कि.ग्रा. जीनेव या मन्कोजेव का घोल १०-१५ दिनों के अन्तर पर दो बार छिडकाव करें ।

__गन्नाः__ सिंचित भूमि में नत्रजन खाद की बची हुई मात्रा (एक बोरी यूरिया भी जून के अन्त तक डाल दें । असिंचित भूमि में मानसून शुरू होने पर डालें । इसके तुरंत बाद जून माह में ही गन्ने में भारी मिट्टी चढ़ा दें । जून में सिंचाई १० दिन के अन्तर पर करें । कीट नियंत्रण के लिए अप्रैल व मई माह में बताये तरीके अपनायें । गुरदारसपुर वोरर के हमले वाले गन्ने के बीच के पत्ते सूखने लग जाते है तथा गन्ने बीच में से आसानी से टूट जाते है । ऐसे गन्नो को हर सप्ताह काटकर नष्ट कर दें । ऐसे खेतों में मोढ़ी फसल न लें तथा खाली पडे गन्ने के खेतों की जुताई करके ठूंठ नष्ट कर दें । दीमक यदि सिचांई से काबू न आवे तो २.५ लीटर क्लोरपारीफास ६०० लीटर पानी में मिलाकर छिडके । जून माह में कंडुआ (स्मट) नामक फफूंद रोग बहुत फैलता है । जिसके लिए नम उष्म विधि से उपचारित बीज लगाये तथा रोगी पौधों को निकालकर नष्ट करें ।

__कपास__ - कपास जून के पहले सप्ताह तक भी लगाई जा सकती है परन्तु मई की बीजाई कीडों से रक्षा करती है । कपास के लिए ४-६ सिंचाईयों की जरूरत पडती है । पहली सिंचाई बीजाई के 1 महिने बाद तथा इसके बाद २-३ सप्ताह के बाद दें । कपास में पानी खडा नहीं रहना चाहिए, इसे तुरंत निकाल देना चाहिए । इससे फसल में अच्छी बढ़ोतरी होगी । यदि नत्रजन खाद बीजाई के समय नहीं दी है तो एक बोरा यूरिया पौधों को विरला करने पर दे सकते है । कपास में दीमक, पौधें की जडे काटकर खा जाती है तथा हरा तेला, चुरडा (सिाप) व सफेद मक्खी पत्तों में से रस चूसकर पौधें की बढ़वार तथा उपज कम करती है । रोकथाम के लिए मई माह में बताये तरीके अपनाएं ।

__अरहर, मूंग व उडद__ - जून में भी अरहर लगाई जा सकती है पूसा बैसाखी (टाईप-४४) मूंग जून में भी लगाया जा सकता है । उडद की टी-९ किस्म हरियाणा में तथा मास-३३८ व मास १-१ पंजाब में लगाई जा सकती है । कृषि क्रियाएं मई माह में बताई जा चुकी है ।

__तिल__ - सिंचित अवस्था में जून माह में तिल की फसल लगा सकते है । हरियाणा तिल-१ तथा पंजाब तिल-१ लगभग ८० दिन में तैयार हो जाती है तथा ५० प्रतिशत तेल देती है । तिल के लिए अच्छी जल निकास वाली रेतीली-दोमट भूमि अच्छी तरह तैयार करें । १० टन गोबर की खाद प्रति एकड काफी होती है । कमजोर मिट्टी में आधा बोरा यूरिया बीजाई के समय डाल सकते है । पौधों में ६ ईचं तथा लाइनों में 1 फुट दूरी रखें । १-२ कि.ग्रा. बीज प्रति एकड २ ईचं गहराई पर लगायें । बीज का उपचार थाइरम ३ ग्रा / कि.गा. बीज के हिसाब से करें । हरा तेला के लिए २०० मि.ली. मैलाथियान ५० ई.सी को २०० लीटर पानी में मिलाकर २ सप्ताह के अन्तर पर दो बार छिडके ।

__मूंगफली__ - सिंचित क्षेत्रों में मूंगफली की बीजाई १५ फरवरी से शुरू हो जाती है तथा जून अन्त तक बो देनी चाहिए । बारानी क्षेत्रों में मानसून आने पर जुलाई प्रथम सप्ताह तक बो दें । यह ११०-१३० दिनों में पक जाती हैं । दोमट मिट्टी जिसपर ऊपर रेतीली मिट्टी की तह तथा अच्छा जल निकास वाली भूमि पर मूंगफली अच्छी होती है । स्वस्थ्य और मोटी मूंगफलियों को बीजाई से १५ दिन पहले हाथ से छील कर ३०० भाग साफ दानों को 1 भाग दवाई थिराम या कैप्टान से उपचारित करें । मूंगफली का ३५-६० कि.ग्रा. प्रति एकड बीज को २ ईंच गहरा, किस्म के हिसाब से जैसे पंजाब मूंगफली-१ के लिए 1 फुट x ९ ईंच दूरी पर, मूंगफली हरियाणा-१, ४,एम-१३ व एम-१४५ के लिए ६ ईंच x ६ ईंच दूरी पर लगायें । खाद की पूरी मात्रा (आधा बोरा अमोनियम सल्फेट, २.५ बोरा सिंगल सुपर फास्फेट तथा १/३ म्यूरेट आफ पोटाश तथा १०० कि.ग्रा. जिप्सम) बिजाई के समय ड्रील कर दें । पहली निराई व गुडाई, बिजाई के ३ सप्ताह बाद कर दें ।

<u>सोयाबीन</u> - फसल की किस्में ब्रैग, पी.के.४१६, ४७२, ५६४ हरियाणा के लिए ; पी.के.४१६ पंजाब के लिए ; शिवालिक, ली, ब्रैग, पालम सोया हिमाचल में उपयुक्त पायी गई है । सोयाबीन की बीजाई जून अन्त से लेकर जुलाई शुरू तक हो जानी चाहिए । पलेवा करने के बाद बीजाई करने से अकुरण पर बुरा प्रभाव नही पडता है । ३० कि.ग्रा. बीज को सोयाबीन -राईजाबियम टीका लगाकर १.५ फुट दूरी पर तथा 1 ईंच गहरा लगाये । सोयाबीन और मक्का की मिश्रित खेती भी बहुत लाभदायक है । इसमें 1 फुट की दूरी पर दो सोयाबीन लाईनें फिर 1 लाईन मक्का लगायें । बीजाई के समय आधा बोरा यूरिया तथा ४ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट तथा १०० कि.ग्रा. जिप्सम डालें । खेत में पानी का रूकना हानिकारक होता है ।

<u>चारा</u> - ज्वार की बीजाई जून में करने से इसके चारे में एच.सी.एन. का जहर कम बनता है तथा इसे खाकर पशु बीमार नहीं होते । बीजाई जून अन्त में करें । मक्चरी को भी २५ जून से १४ जुलाई तक 1 फुट दूर लाईनों में १६ कि.ग्रा. बीज के हिसाव से बीजें । जून में लोबिया व ग्वार भी लगा सकते है । अप्रैल-मई में बोई चारे की फसल में पानी लगा दें ताकि फसल कटाई जल्दी मिल सके ।

<u>मुलहटी</u> - एक बहुवर्षीय औषध फसल है जिसकी जडों से खांसी की दवाई बनती है । जून के अंतिम सप्ताह में यदि अच्छी वर्षा हो जाये तो इसे अच्छे जल निकास वाली भूमि में लगा सकते है , नहीं तो मौनसून आने पर जुलाई-अगस्त में लगायें । बीजाई के लिए लाईनों में ३ फुट तथा पौधों में १.५ फुट दूरी रखें । ३-४ आखों वाले जड के ६ इंच टुकडे के १/४ हिस्से को जमीन से बाहर रखकर वाकी को मिट्‌टी में दबा दें फिर खेत में पानी लगा दें । जड गलन से बचाव के लिए जडो को वाविस्टीन के घोल में ५-१० मिनट डुबाये तथा फिर पानी से धोकर लगाये । एक एकड में १०० कि.ग्रा. जडों की रोपाई करें ।

<u>ढ़ैंचा</u> - एक फलीदार फसल है जोकि हरी खाद बनाने के लिए सर्वोत्तम है । पंजाब ढ़ैचा-१ किस्म के २० कि.ग्रा. बीज को ८ ईचं दूरी पर लाईनों में लगाये । यदि फसल से बीज बनाना है तो बीज मात्रा आधी तथा पोधों में दूरी दुगुनी कर दें । बीजाई पर १.५ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट डालें यदि गेहू में फासफोरस दिया है तो इस खाद को न डालें । हरी खाद वाली फसल से ३-४ सिंचाईयां करें तथा ५५-६० दिन बाद मिट्‌टी में अच्छी तरह मिलाकर हरी खाद बना दें फिर एक सप्ताह बाद अगली फसल लग सकती है ।

<u>सब्जिया</u> - जून महिने में लगी हुई सब्जियों में पानी समय-समय पर देते रहे इससे खूब फल आयेगें । भिण्डी बोने का समय भी हो गया है । पूसा सावनी का ५ कि.ग्रा. बीज प्रति एकड १.५ फुट दूर लाईनों में तथा ६ ईंच दूर पौधों में लगायें । मिर्च की पौध भी लगा सकते है, इसकी उन्नत किस्म पूसा ज्वाला है । बैगन की लम्बी किस्मों में पूसा परपल लोग, पूसा परपल कलस्टर , पूसा क्रान्ति है । गोल बैंगन में पूसा परपल राउण्ड, पूसा अनमोल, पंत ऋतुराज है । टमाटर के लिए पूसा रूबी, पूसा अर्ली, सलेक्शन १२०, मारग्लोब प्रमुख है । बुआई के समय 1 बोरा यूरिया, ४ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट, 1 बोरा म्यूरेट आफ पोटाश दें तथा काफी मात्रा में गोबर की खाद दें । पहाडी क्षेत्रों में जून में प्याज की पोध की रोपाई भी ८ ईंच x ४ ईंच दूरी पर कर दें । खेत में १० टन गोबर की खाद तथा एक बोरा यूरिया, ३ बोरा सिंगल सुपर फास्फेट, 1 बोरा म्यूरेट आफ पोटाश बीजाई के समय डाले ।

<u>बागवानी</u> - जून माह में फलों को आवश्यकतानुसार पानी देते रहे । नींबू में आयु के हिसाब से ५० ग्राम यूरिया एक वर्ष पुराने पेड के लिए तथा हर वर्ष आयु के लिए ५० ग्राम यूरिया प्रति पेड बढ़ा दीजिये । यह मात्रा ५ वर्ष से बडे पेड में २५० ग्राम ही रहेगी । नींबू की सूखी टहनियों को काटकर स्ट्रैप्टोसाइक्लिलान २ ग्राम तथा व्लाइटोक्स २० ग्राम को १० लीटर पानी में मिलाकर १५ दिन में अन्तर में छिडकें । फूल - हल्का पानी नियमित रूप से देते रहें तथा तेज धूप से बचाव रखें । घास के लांन भी लगा सकते हैं । नए फूलों में पारचूलाका, कैना, सल्विया, पटूनिया, कांकसकाम्ब लगा सकते हैं । वर्षा ऋतु वाले फूलों की बीजाई भी पूरी कर लें ।

जून में कृषि संबंधित कोई भी अन्य समस्या के समाधान के लिए आप हमारे फोन ०१२०-२५३५६२८ या ई-मेल wsguleria@kribhco.net से भी सम्पर्क कर सकते हैं । अगले माह फिर मिलेंगे । जय हिन्द !

****